पद १५ (राग: हमीर - ताल: त्रिताल)

दाता जगीं माणिकप्रभु तो एक ।।ध्रु. ।। उपासकातें त्या त्या रूपें।

बीज अनेक।।२।। मनोहर म्हणे एक संत। वदती वेद प्रमुख।।३।।

इच्छित पुरवी देख।।१।। जीवन एकचि फलिता करितें। भूवरि